इबसा की भूमिका और प्रासंगिकता

कु0 गायत्री देवी*

सारांश

सम्पूर्ण विश्व कई संगठनों में विभक्त है। आज अमीरी और गरीबी एक सूक्ष्म स्तर पर नहीं विशाल स्तर पर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित कर रही है। इबसा के संगठन देश तथा उन देशों में निवास करने वाले व्यक्तियों की समस्याओं तथा उनके आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक समस्याओं को अपने पड़ोसी देशों के सहयोग से समाप्त करती है। आज आर्थिक क्षेत्र में दुनिया दो भागों में बटी हुई है– उत्तर और दक्षिण। उत्तर अमीर देशों का प्रतीक है और दक्षिण गरीब अर्थात विकासशील देशों का।

इबसा दक्षिण के तीन विकासशील देशों का संगठन है। दक्षिणी गोलार्द्ध के निर्धन राष्ट्रों में निरन्तर बनी रहने वाली मन्दी की स्थिति उत्तर–दक्षिण वार्ताओं में गतिरोध की स्थिति एवं विश्व स्तर की आर्थिक संस्थाओं की अकर्मण्यता ने विकासशील राष्ट्रों के लिये दक्षिण–दक्षिण सहयोग का नारा बुलन्द करना अनिवार्य बना दिया। दक्षिण–दक्षिण सहयोग में अनेक सगंठन बने हैं, परन्तु इनमें समान चुनौतियों का सामना कर रहे भारत, ब्राजील तथा दक्षिण अफ्रीका ने विश्व व्यापार संगठन के कानकुन सम्मेलन के समाप्त होने के कारण अपनी समस्याओं तथा व्यापार के विकास के लिये दक्षिण–दक्षिण सहयोग के माध्यम से एक नये संगठन पर सहमति जतायी। जिस पर 6 जून, 2006 को औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किये गये।

मुख्य शब्द– इबसा, शिखर सम्मेलन, त्रिपक्षीय, घोषणा पत्र, समाधान, अंकटाड।

शोध पद्धति

इस शोध पत्र की शोध पद्धति विवरणात्मक है। इबसा में सम्मिलित तीनों देशों की समस्या समान है और तीनों ही देश विकासशील हैं। इबसा के गठन से अब तक (2006 से 2018 तक) पाँच सम्मेलन हो चुके हैं। इनमें सम्मिलित मुददों के निवारण हेतु अन्य कई मंच भी बने हैं। इबसा के बने मंच, समझौते के आधार पर भविष्य में भारत को इस मंच से कितने लाभ की सम्भावना रहेगी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. इबसा के अब तक के सम्मेलनों का अध्ययन।
2. इबसा की भूमिका और प्रासंगिकता, 2006 से 2018 के समझौतों की जानकारी।
3. इबसा के सहयोगी संगठन तथा भारत की चुनौतियों का समाधान। प्राप्ति एवं लाभ।

उपरोक्त के व्यवस्थित अध्ययन के लिये इबसा के सम्मेलनों की जानकारी लेना। इस विषय पर एक ही समस्या से सम्बन्धित अन्य संगठनों की आवश्यकता भी इस अध्ययन का उद्देश्य है।

इबसा का परिचय

इबसा एक अनोखा मंच है। जो तीन अलग–अलग महाद्वीपों के तीन बड़े एवं प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका को एक मंच पर लाता है। जी–8 शिखर बैठक के दौरान 2 जून, 2003 को एवियन (फ्रांस) में भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह तथा ब्राजील के तात्कालीन राष्ट्रपति डीलमा रोजेफ और दक्षिण अफ्रीका के तात्कालीन राष्ट्रपति जैकब जूमा के बीच बैठक में इबसा की स्थापना पर विचार विमर्श किया गया। जब इन तीनों देशों के विदेश मंत्रियों की 6 जून, 2003 को ब्राजीलिया में बैठक हुई तब इस समूह को औपचारिक रूप दिया गया तथा तीनों देशों भारत अर्थात (INDIA), ब्राजील (BRAZIL) तथा दक्षिण अफ्रीका (SOUTH AFRICA) के नाम के पहले अक्षर IBSA पर इसका नाम इबसा वार्ता मंच रखा गया और ब्रासीलिया घोषणा–पत्र जारी किया गया।

इबसा के सदस्य देशों का परिचय

दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केपटाउन (विधायी राजधानी) है। सबसे बडा नगर जोहान्सबर्ग है। भाषा– अफ्रीकांस, सरकार– संवैधानिक लोकतंत्र, राष्ट्रपति– जैकब जूमा, उपराष्ट्रपति– गालेमामोटलाय हैं। दक्षिण अफ्रीका ने

* शोधछात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

स्वतंत्रता यूनाईटेड किगंडम से प्राप्त की तथा संघ का निर्माण 31 मई 1910 को बना, इसका कुल क्षे0 1.22 लाख किमी0^2 है तथा जल नगण्य है। जनघनत्व 41 प्रति किमी0 तथा प्रतिव्यक्ति आय 10,136 डालर है, मुद्रा दक्षिण अफ्रीकी रेंड है तथा इसे दक्षिण अफ्रीका (साउथ अफ्रीका) भी कहा जाता है। अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण छोर पर स्थित यह एक गणराज्य है। इसकी सीमायें उत्तर में नामीबिया, बोत्सवाना और जिम्बाब्वे तथा उ0 पू0 में मोज़ाम्बिक और स्वाज़ीलैण्ड के साथ लगती हैं, जबकि लेसूथो एक स्वतंत्र ऐसा देश है जो पूरी तरह से दक्षिण अफ्रीका से घिरा हुआ है। यूरोपीय लोगों के आगमन के दौरान क्षेत्र में रहने वाले बहुसंख्यक स्थानीय लोग आदिवासी थे, जो अफ्रीका से हजारों साल पहले आये थे। चौथी तथा पांचवी शताब्दी में बान्तु भाषीय आदिवासी दक्षिण की ओर बढ़े और दक्षिण अफ्रीका के वास्तविक निवासियों को विस्थापित करने के साथ–साथ उनके साथ शामिल भी हो गये। यूरोपीय लोगों के आगमन के दौरान कोसा और जलू दो बड़े समुदाय थे। काले दक्षिणी अफ्रीकी और उनके सहयोगियों के सालों के अंदरूनी विरोध कार्रवाई और प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप आखिरकार 1990 में दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने वार्ता शुरू की, जिसका अंत भेदभाव वाली नीति के खत्म होने और 1994 में लोकतांत्रिक चुनाव से हुआ। देश फिर से राष्ट्रकुल देशों में शामिल हुआ। अफ्रीकी जनजातियों के अलावा यहां कई एशियाई देशों के लोग भी आये, जिनमें सबसे ज्यादा भारत से आये लोगों की संख्या थी।

ब्राजील– दक्षिण अमेरिका के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित यह देश विश्व का पाँचवाँ बड़ा देश है। चिली और इक्वेडोर को छोड़ कर शेष सभी दक्षिणी अमेरिकी देशों की सीमा इससे मिलती है। देश का अधिकतर भाग विषुवत वृत के दक्षिण में आता है। यहाँ के ब्राज़ील रेडवुड वृक्ष के नाम पर इस देश का नाम ब्राजील रखा गया। इसके उत्तर तथा पूरब में अटलांटिक महासागर है। ब्राजील का अधिकतर भाग उच्च भूमि या पठार है। पूर्वी भाग सबसे उंचा है और तट की ओर खड़ी ढाल बनाता हैं। यहाँ लावा के जमाव से उपजाऊ मिटटी मिलती है जिसमें कहवे की अच्छी खेती होती है। देश का उत्तर पश्चिम भाग समतल मैदान है। इसका निर्माण अमेजन और उसकी सहायक नदियों के द्वारा हुआ है। ब्राजील की जलवायु मुख्यतः उष्णार्द्र है। केवल दक्षिणी भागों में गर्मी कुछ कम पड़ती है। वर्षा सिर्फ गर्मियों में होती है। वृक्षों की सघनता, दलदल, भूमि के अस्वास्थ्यकर, जलवायु और परिवहन की कठिनाईयों के कारण ब्राजील अपने वनों का भरपूर उपयोग नहीं कर पा रहा है। ब्राजील रबर के पेड़ का मूल स्थान है, परन्तु उपरोक्त कारणों से आज यह रबर उत्पादन में काफी पीछे चला गया है। ब्राजील विश्व में सबसे अधिक कहवा उत्पन्न करने वाला देश है। इसका सबसे बडा निर्यातक भी यही है। ब्राजील के अधिकतर खनिजों के भण्डार मिनास, गिराइस राज्य में हैं। यहाँ लौह अयस्क और अभ्रक के विशाल भण्डार हैं।

भारत– भारत इबसा का एक महत्वपूर्ण सदस्य देश है। भारत उत्तरी पूर्वी गोलार्द्ध में 8.4' से 37.6' उत्तरी अक्षांश तथा 68.7' से 97.25' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यहां का समय ग्रीनवीच समय से 5 घंटा 30 मिनट आगे है। कर्क रेखा भारत के मध्य से गुजरती है, यह भारत को उष्णकटिबंधीय व उपोष्णकटिबंधीय भागों में बाँटती है। भारतीय भू–भाग की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक 2,933 किमी0 तथा उत्तर से दक्षिण तक 3,214 है। इस प्रकार भारत लगभग चतुष्कोणीय देश है। प्रायद्वीपीय भारत त्रिभुजाकार आकृति में है तथा हिन्द महासागर व उसकी शाखाएं अरब सागर व बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में तटीय सीमा बनाती हैं। भारत की स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी0 तथा मुख्य भूमि की तटीय सीमा की लम्बाई 6,100 है। द्वीपों सहित कुल देश की तटीय सीमा 7515.5 किमी0 है। इस प्रकार भारत की कुल सीमा 22,716.5 किमी0 है। भारत हिन्द महासागर में केन्द्रीय स्थिति रखता है। हिन्द महासागर भारत के लिये पर्याप्त भू राजनीतिक, भू सामरिक, आर्थिक व व्यापारिक महत्व रखता है।

इबसा की बैठकें व सम्मेलन

ब्राजीलिया घोषणा–पत्र ने विदेश मंत्रियों के स्तर पर एक त्रिपक्षीय आयोग की घोषणा की। इस आयोग की नियमित रूप से बैठक होती है। त्रिपक्षीय आयोग की पहली बैठक नई दिल्ली में 4 मार्च, 2004 को हुई, सातवीं बैठक भी 8 मार्च, 2011 को नयी दिल्ली में हुई तथा 8वीं बैठक दक्षिण अफ्रीका में हुई। इसके अलावा प्रत्येक इबसा शिखर बैठक से पूर्व तथा न्यूयार्क में यू0एन0जी0ए0 के दौरान विदेश मत्रियों की नियमित रूप से बैठक होती है।

इबसा देशों के बीच सेक्टोरल सहयोग को आगे बढाने के लिये तीन करारों तथा 17 एम0ओ0यू0 पर हस्ताक्षर किये गये हैं। दोहा चक्र पर अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिये इबसा के व्यापार मंत्रियों की बैठक अक्सर होती रहती है। जून, 2009 में ओ0ई0सी0डी0 को व्यापार मंत्री की बैठक के दौरान इन देशों ने संयुक्त घोषणा को अंगीकार किया जिसमें दोहा चक्र की दिशा में तीनों देशों के सांझे दृष्टिकोण को उजागर किया गया ।

जनवरी, 2013 में दावोस में उनकी बैठक हुई। जिनेवा एवं न्यूयार्क में तीनों देशों के स्थायी प्रतिनिधित्व की बैठक होती है, ताकि डब्ल्यू0टी0ओ0 तथा डब्ल्यू0आई0पी0ओ0 से संबधित मुद्दों का समन्वय किया जा सके ।

इबसा देशों के विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी मंत्रियों की चार बैठकें हो चुकी हैं। दो बैठकों की मेजबानी भारत द्वारा की

गयी है, पहली बैठक 2004 में तथा चौथी बैठक 2008 में। तीसरी इबसा शिखर बैठक से पूर्व की दो बैठकों की मेजबानी ब्राजील द्वारा की गयी, दूसरी बैठक 2005 में तथा तीसरी बैठक 2006 में। इबसा देशों के नौसैनिक अभ्यास का तीसरा संस्करण (इबसा एम. ए. आर. 3), अक्टूबर 2012 में दक्षिण अफ्रीका में हुआ। इन अभ्यासों में भारत के दो नौसैनिक पोतों ने भाग लिया। दूसरे संस्करण (इबसा एम ए आर 2) का आयोजन सितम्बर, 2010 में दक्षिण अफ्रीका में हुआ।

जिनेवा में 2010 में आई. एल. ओ. तथा इबसा के सदस्यों के मध्य मंशा की घोषणा पर हस्ताक्षर हुये। इस घोषणा के तहत श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने 1 से 3 मार्च 2010 के दौरान नई दिल्ली में स्वरोजगार गारंटी योजनाएं तथा संपोषणीय समावेशी, विकास नवाचार अभिसरण और अनुकूलन पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दोहा विकास दौर 2001 में शुरू किया था, जो आज भी जारी है। दोहा विकास दौर या दोहा विकास एजेंडा (डीडीए) के मौजूदा व्यापार वार्ता विश्व व्यापार संगठन में जो (डल्यूटीओ) नवंबर 2001 में सम्पन्न हुआ तथा जिसके महानिदेशक माइक मूर थे जिन्होंने इसकी अध्यक्षता की। इसका उद्देश्य दुनिया भर में व्यापार बाधाओं को दूर करना है। 2008 के बाद से वैश्विक व्यापार की सुविधा प्राप्त हुई।

कतर में 2001 में दोहा दौर एक मंत्रीय स्तरीय बैठक के साथ शुरू हुई। इसके बाद कैनकुन में मंत्रिस्तरीय बैठक हुई। मेक्सिकों में (2003) और हांगकांग (2005) में संबंधित वार्ता हुई। पेरिस, फ्रांस (2005), (2007) और जिनेवा, स्विज़रलैण्ड (2004, 2006, 2008) सम्पन्न हुई। जुलाई 2008 वार्ता कृषि नियमों पर एक समझौते तक पहुँचने में नाकाम रहने के बाद समाप्त हो गई। संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत और चीन के बीच 2008 में गहन वार्ता के दौरान समझौते की मांग रखी गयी, 2011 में जिसके गतिरोध का कोई परिणाम नहीं निकला ।

इबसा के सहयोगी मंच

दक्षिण–दक्षिण संवाद का वास्तविक सूत्रपात सन् 1968 में नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय अंकटाड के सम्मेलन में विकासशील राष्ट्रों में आपसी सहयोग की आवश्यकता पर बल देने के साथ हुआ था। सन् 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने जब नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आवाहन किया तो विकासशील राष्ट्रों का विशेष उल्लेख किया गया। ग्रुप–77 की सन् 1979 की बैठक में भी विकासशील राष्ट्रों के मध्य आपसी व्यापार की वृद्वि की आवश्यकता एवं सामूहिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया। 1981 में काराकस में विकासशील राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग पर हुई, उच्चस्तरीय बैठक में विकासशील राष्ट्रों के मध्य प्रशुल्क अधिमानों की विश्वव्यापी प्रणाली की मांग की गयी ताकि व्यापार उत्पादन रोजगार में वृद्वि हो सके। 'दक्षिण–दक्षिण सहयोग' और सामूहिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिये उत्तरी कोरिया में विकासशील देशों के वित्त मंत्रियों की बैठक का निर्णय लिया गया। प्योगयांग घोषणा में 'दक्षिण–दक्षिण सहयोग' और सामूहिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया। नई दिल्ली में 22 व 24 फरवरी 1981 की अवधि में 44 देशों का सम्मेलन हुआ जिसका उद्घाटन श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। इस सम्मेलन ने 'दक्षिण–दक्षिण सहयोग' के पुख्ता दिशा संकेत खोजे। सम्मेलन में सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात जैसे अमीर देश भी आमंत्रित थे। उनसे यह आशा की गयी कि वे अपने गरीब भाईयों की मदद के लिये आगे आयेंगे यदि तेल सम्पन्न देश अपने धन को विकासशील देशों में लगाना स्वीकार कर लें तो बेशक दक्षिण (निर्धन विकासशील देशों का) का आर्थिक चेहरा बदल सकता है।

इबसा के 6 जनदर मंच

इबसा के 6 जनदर मंच हैं जो इस प्रकार हैं – संसदीय मंच, महिला मंच, शिक्षाविद् मंच, स्थानीय अभिशासन मंच, व्यवसाय मंच। एम0एस0ई0 पर एक त्रिराष्ट्रीय मंच भी है। इबसा से संबधित कामकाज देखने वाले तीनों देशों के विदेश कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी फोकल प्वाइंट के रूप में नामोनिर्दिष्ट हैं। वर्ष में एक बार फोकल प्वाइंट की बैठक होती है तथा त्रिपक्षीय आयोग से पूर्व भी उनकी बैठकें होती हैं।

मूल्यांकन

इस प्रकार शोधपत्र में इबसा में भारत की भूमिका एवं प्रासंगिता को इबसा के सदस्य देशों के परिचय, इबसा के सहयोगी मंच तथा इबसा के माध्यम से बने 6 जनदर मंच पर विश्लेषणातमक एवं विवरणात्मक विधि द्वारा अध्ययन किया गया। इबसा के तीनों सदस्य देशों का महत्व भौगोलिक तथा राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। तीनों ही देश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान एक महत्वपूर्ण देश के रूप में रख रहे हैं। इबसा का गठन अपनी मूल समस्यों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, भोजन, आतंकवाद, कृषि आदि के लिये किया गया।

इबसा के शिखर सम्मेलन एक दौर में छह साल से अधिक समय तक आयोजित नहीं किया गये हैं। इसके बाबजूद (IBSA) त्रिपक्षीय फोरम को अप्रचलित नहीं माना जा सकता है। प्रतिबद्धताओं और कार्यान्वयन दोनों क्षेत्रों में प्रगति हुई है।

विकासशील और कम विकासशील दोनों देशों में (IBSA) फंड के प्रभावी कार्यान्वयन और (IBSA) फैलोशिप प्रोग्राम के शुभारंभ में प्रगति देखी जा सकती है। आईबीएसए त्रिपक्षीय फोरम की सफलता दर्शाता है।

सन्दर्भ सूची

1. Puri, L. (2007). "IBSA: An Emerging Trinity in the New Geography of International Trade". Policy Issues in International Trade and Commodities, Study Series, No. 35. UNCTAD, Geneva, Switzerland.
2. Latin America and the Caribbean. Bulletin FAL, No. 119. Santigo, Chile.
3. De, P. (2006). "India, Brazil, South Africa (IBSA) Economic Cooperation: Towards a
4. Department of Trade and Industry of South Africa. South African Trade Statistics. Pretoria, South Africa.
5. Fonseca, R., Azevedo, M. e Velloso, E. (2005). "O Potencial de Comércio entre Brasil e Índia: Um Exame com Base nas Estruturas de Vantagem Comparativa". Estudos CNI No. 3. Brasília, Brazil.
6. Hoffman, J., Isa, P. e Perez, G. (2001). "Trade and Maritime Transport Between Africa and
7. South America". Série Recursos Naturais e Infra-Estrutura, No. 19. ECLAC, Santiago, Chile. IBSA Dialogue Forum (2008). Somerset West Ministerial Communiqué. (2007). New Delhi Ministerial Communiqué.

External links

1. IBSA – India, Brazil, South Africa – News and Media

समाचार पत्र एवं पत्रिकायें

1. ब्रिक्स शिखर सम्मेलन पेज 1 दृष्टिकोण मंथन मई, 2011